



वार्षिक रिपोर्ट 2026

कैलेंडर वर्ष 2026 का सम्पूर्ण फलादेश

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:03

॥ पारस वाणी ॥

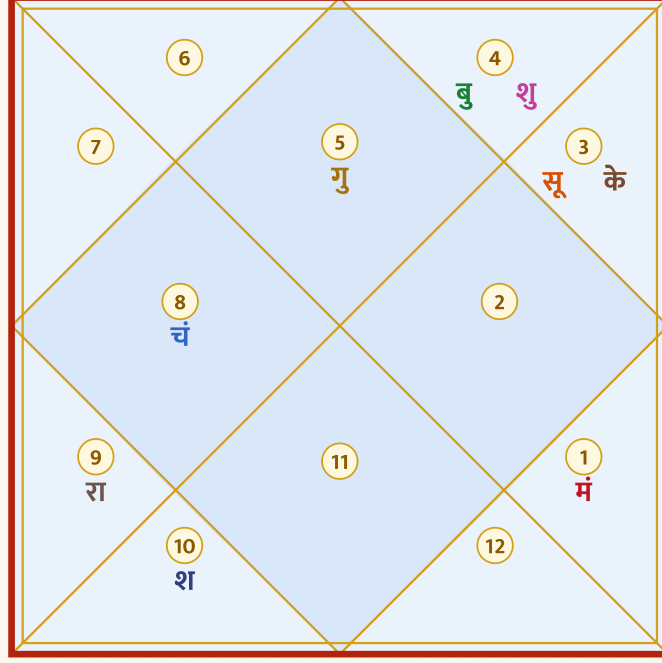
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035

2026 का परिचय व समग्र दृष्टि

अ ध्या य 1

2026 का परिचय व समग्र दृष्टि

अभय शर्मा जी, वर्ष 2026 आपके जीवन में एक ऐसा पड़ाव लेकर आ रहा है जहाँ **परिश्रम की परीक्षा और धैर्य का पुरस्कार** — दोनों एक साथ चलेंगे। यह वर्ष न तो पूरी तरह कठिन है, न सहज — यह एक संक्रमण-काल है, जिसमें जो टिका रहा, उसके लिए अगले कई वर्षों की नींव यहीं बनेगी।

दशा की मुख्य धुरी — सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा

2026 का पूरा वर्ष **सूर्य महादशा और शनि अंतर्दशा** (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027) के भीतर बीतेगा। सूर्य आपके लग्नेश हैं और ग्यारहवें भाव में विराजमान हैं — यानी महादशा लाभ व आत्म-सम्मान की ओर संकेत करती है। परंतु शनि की अंतर्दशा अपने साथ धीमापन, अनुशासन और कड़ी मेहनत की माँग लेकर आती है। शनि आपके छठे भाव में स्वराशि मकर में बैठे हैं — यह शत्रु-विजय और सेवा का भाव है। इसलिए **इस पूरे वर्ष की भाषा यही है — बिना शॉर्टकट के, सिर सुझाकर काम करते रहिए।**

षड्बल में सूर्य का बल भरपूर है (9.86 रूप), पर अवस्था मृत है — अर्थात् संभावना बड़ी है, पर फल देर से और कम मात्रा में मिलेगा। शनि का बल भी पर्याप्त है (7.5 रूप), पर अवस्था कुमार है — आधा फल, बनता हुआ। इन दोनों को मिलाएँ तो स्पष्ट होता है: **2026 नींव बनाने का वर्ष है, फ़सल काटने का नहीं।**

गोचर का बड़ा चित्र — गुरु और शनि

2026 में गुरु कर्क राशि में विराजमान हैं — जो आपके लग्न से बारहवाँ भाव है। यह स्थिति व्यय, एकांत और आंतरिक विकास की ओर इशारा करती है। गुरु का यह गोचर कर्म में सफलता से अधिक **मन की गहराई और आध्यात्मिक जागरूकता** का समय देता है। अक्टूबर 2026 के बाद जब गुरु वृश्चिक की ओर बढ़ेंगे, तब आपके चतुर्थ भाव (सुख, घर) पर उनकी दृष्टि पड़ेगी — उस समय से घरेलू व भावनात्मक स्तर पर राहत आरंभ होगी।

शनि मीन राशि में आठवें भाव में वक्री हैं — यह गहरी जाँच, पुराने मामलों का हिसाब-किताब और अनावश्यक बोझ उतारने का संकेत है। **जो पुराना है और काम का नहीं, उसे इस वर्ष जाने दीजिए।**

योगिनी दशा की दूसरी दृष्टि

भद्रिका योगिनी (स्वामी बुध) 2029 तक चलेगी — यह वाणी, बुद्धि, व्यापार और संवाद का काल है। अभी अंतर-योगिनी सिद्धा (शुक्र) चल रही है जो सुख और लाभ की ओर संकेत करती है। पर चूँकि विंशोत्तरी और योगिनी दोनों के स्वामी अलग हैं, इशारा **मिश्रित** है — कुछ क्षेत्रों में सहजता, कुछ में श्रम। एकतरफ़ा नहीं चलेगा 2026।

मुख्य बातें

- **सूर्य-शनि अंतर्दशा** पूरे 2026 पर हावी — अनुशासन और धैर्य ही इस वर्ष का सबसे बड़ा उपाय है
- गुरु का बारहवें भाव में गोचर — **बाहरी विस्तार से अधिक भीतरी विकास का समय**
- शनि आठवें भाव में वक्री — पुराने हिसाब चुकाने और अनावश्यक बोझ छोड़ने का अवसर
- षड्बल व अवस्था के अनुसार — **फल मिलेगा, पर समय लेगा; जल्दबाज़ी इस वर्ष नुकसानदेह है**
- **फ़रवरी 2027** से बुध अंतर्दशा — तब स्थिति हल्की होगी; अभी नींव मज़बूत करने पर ध्यान दीजिए



2026 का समग्र फल व मुख्य मोड़

अ ध्या य 2

2026 का समग्र फल व मुख्य मोड़

अभय शर्मा जी, वर्ष 2026 आपके लिए एक परिपक्वता का साल है — जहाँ एक ओर जिम्मेदारी का बोझ बढ़ेगा, वहीं दूसरी ओर आपकी नींव की असली परीक्षा होगी। **यह वर्ष न पूरी तरह कठिन है, न सहज — यह एक संक्रमण-काल है जो आपको तराशेगा।**

दशा की मुख्य धुरी — सूर्य महादशा, शनि अंतर्दशा

वर्ष 2026 की सबसे बड़ी ज्योतिषीय सच्चाई यह है कि आप सूर्य महादशा के भीतर शनि अंतर्दशा में हैं — फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक। ये दोनों ग्रह स्वभाव से परस्पर विरोधी हैं — सूर्य अहं, नेतृत्व व तात्कालिकता का ग्रह है; शनि धैर्य, नियम व विलंब का। जब दोनों एक साथ काम करते हैं, तो व्यक्ति के भीतर एक खिंचाव रहता है — "आगे बढ़ना है" और "रुककर सँभलना है" — यह दोनों आवाज़ें एक साथ सुनाई देती हैं।

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में हैं — लाभ, इच्छापूर्ति और सामाजिक संपर्क का स्थान। परंतु उनकी अवस्था मृत है, जिसका अर्थ है कि उनका फल इस समय बहुत सीमित रूप में मिलेगा — बड़ी उपलब्धियों की अपेक्षा रखना उचित नहीं। शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — यह स्थिति बताती है कि इस वर्ष जो भी बनेगा, वह श्रम, अनुशासन और धैर्य से ही बनेगा। शॉर्टकट इस साल काम नहीं करेंगे।

योगिनी दशा की दृष्टि से भद्रिका (बुध) चल रही है, जिसकी अंतर-योगिनी सिद्धा (शुक्र) है — फ़रवरी 2027 तक। बुध और शुक्र दोनों ही आपकी कुंडली में द्वादश भाव में बैठे हैं, और दोनों कमज़ोर अवस्था में हैं। इसलिए विंशोत्तरी और योगिनी — दोनों पद्धतियाँ अलग-अलग इशारा कर रही हैं। संकेत मिश्रित हैं — कहीं प्रगति, कहीं रुकावट।

गोचर के दो बड़े खिलाड़ी — गुरु और शनि

गुरु इस समय कर्क राशि में हैं और जून 2026 से अक्टूबर 2026 तक आपके लग्न से बारहवें भाव में विराजमान हैं। बारहवाँ भाव व्यय, एकांत और छिपे हुए प्रयासों का है। गुरु यहाँ उतने फलदायी नहीं होते जितने केंद्र या त्रिकोण में होते — परंतु इसका एक सकारात्मक पक्ष भी है: यह समय भीतरी तैयारी, आध्यात्मिक चिंतन और किसी बड़े काम की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए अच्छा है। अक्टूबर 2026 के बाद जब गुरु सिंह राशि (आपका लग्न) में प्रवेश करेंगे, तब परिस्थितियाँ बदलने लगेंगी — पर वह यात्रा 2027 में पूरे रंग में आएगी।

शनि मीन राशि में वक्री हैं — आपके लग्न से आठवें भाव में। आठवाँ भाव अचानक परिवर्तन, छिपी बाधाएँ और आत्म-रूपांतरण का भाव है। शनि यहाँ दिसंबर 2026 में मार्गी होंगे और जून 2027 तक यहीं रहेंगे। यह स्थिति बताती है कि **2026 में कोई न कोई अप्रत्याशित मोड़ आ सकता है — नौकरी, स्वास्थ्य, या परिवार में।** घबराने की बात नहीं, पर सतर्क रहना ज़रूरी है। शनि की दृष्टि आपके बारहवें, तीसरे और छठे भाव पर भी पड़ रही है — यानी व्यय, साहस और स्वास्थ्य तीनों प्रभावित होंगे।

17 वर्ष के तीन मुख्य मोड़

पहला मोड़ — फ़रवरी से मई 2026: शनि अंतर्दशा आरंभ होते ही एक सुस्ती या भार महसूस हो सकता है। काम की गति धीमी लगेगी, पर इसका कारण बाहर नहीं — भीतर की तैयारी में है। यह समय किसी नए उद्यम की घोषणा करने का नहीं, नींव मज़बूत करने का है।

दूसरा मोड़ — जून से अक्टूबर 2026: गुरु का बारहवें भाव में गोचर और शनि का आठवें भाव में वक्री रहना — यह दोनों मिलकर एक "भीतरी संकट और बाहरी स्थिरता" का समय बनाते हैं। दिखता कुछ नहीं, पर भीतर बहुत कुछ हल हो रहा होगा। **यदि कोई पुराना उलझा हुआ मामला है — परिवार, धन या रिश्ते में — तो यही समय उसे सुलझाने का है।**

तीसरा मोड़ — नवंबर 2026 से फ़रवरी 2027: शनि अंतर्दशा के अंतिम महीनों में राहत के कुछ संकेत मिलेंगे। फ़रवरी 2027 से बुध अंतर्दशा आएगी — और बुध वाणी, व्यापार व बुद्धि के कारक हैं। **यह बदलाव धीरे-धीरे मार्ग खोलेगा।**

दृष्टि का प्रभाव

गुरु की दृष्टि आपके पाँचवें, सातवें और नवम भाव पर पड़ रही है — संतान, जीवनसाथी और भाग्य पर। यह शुभ दृष्टि इन क्षेत्रों को कुछ सहारा देती है, भले ही गुरु बारहवें भाव में हों। शनि की दृष्टि आठवें से बारहवें भाव पर है — व्यय और एकांत का दबाव बना रहेगा। **केतु इस समय आपके लग्न (सिंह) पर विराजमान हैं और राहु की दृष्टि भी लग्न पर पड़ रही है — यह आत्मविश्वास और स्वास्थ्य के लिए विशेष सावधानी माँगता है।**

मुख्य बातें

- **सूर्य महादशा-शनि अंतर्दशा** (फ़रवरी 2026 – फ़रवरी 2027) यह पूरे वर्ष की धुरी है — धैर्य और अनुशासन ही इस समय का सबसे बड़ा उपाय है।
- **गुरु बारहवें भाव में** — यह समय भीतरी तैयारी और एकांत में किए गए काम के लिए अनुकूल है; बड़ी घोषणाएँ 2027 के लिए उठाकर रखें।
- **शनि आठवें भाव में वक्री** — अप्रत्याशित मोड़ आ सकते हैं; व्यय और स्वास्थ्य पर ध्यान दें।
- **केतु-राहु का लग्न पर प्रभाव** — आत्मविश्वास डगमगाए तो जानें कि यह ग्रह-स्थिति का प्रभाव है, कमजोरी नहीं।
- **फ़रवरी 2027 के बाद** परिस्थितियाँ बेहतर होने लगेंगी — यह मोड़ पास है, बस टिके रहना है।



करियर, व्यवसाय व धन — 2026

अ ध्या य 3

करियर, व्यवसाय व धन — 2026

वर्ष 2026 आपके करियर और धन के लिए एक कड़ी परीक्षा का साल है — पर यह परीक्षा आपको तोड़ने नहीं, माँजने आई है। सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा का यह दौर (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक) आपसे धैर्य, अनुशासन और धीमी पर टिकाऊ प्रगति की माँग कर रहा है — जल्दी का कोई रास्ता यहाँ नहीं चलेगा।

कर्म-भाव की तस्वीर — नींव कमज़ोर है, पर गिरेगी नहीं

आपका दशम भाव (करियर का भाव) वृषभ राशि में है और इसके स्वामी शुक्र हैं — जो जन्म-कुंडली में बारहवें भाव में अस्त हैं। शुक्र की अवस्था मृत है, अर्थात् इस क्षेत्र का स्वामी अपनी पूरी ताकत से खड़ा नहीं हो पा रहा। ऊपर से चंद्र कुंडली में गुरु दशम भाव में हैं — यह एक राहत की बात है, पर गोचर में गुरु इस समय आपके जन्म-लग्न से बारहवें भाव (कर्क, 2 जून से 31 अक्टूबर 2026 तक) में हैं, जो व्यय और ठहराव का स्थान है। **अक्टूबर 2026 के बाद जब गुरु वृश्चिक-कन्या की ओर बढ़ेंगे, तब दशम भाव पर उनकी दृष्टि बनेगी और करियर में स्थिरता बेहतर होगी।**

दशम भाव के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु केवल 3 हैं — यह बताता है कि इस समय गोचर का शुभ फल इस क्षेत्र में आसानी से नहीं उतरेगा।

अधिक परिश्रम, कम परिणाम — यह इस वर्ष की वास्तविकता है। पर यह भी सच है कि **दशमांश (D10) में सूर्य लग्न में हैं** — यह दिखाता है कि आपकी पहचान और नाम का संबंध आपके काम से गहरा है, और वह धीरे-धीरे बनता रहेगा।

दशा का मिज़ाज — शनि जो देते हैं, देर से देते हैं

सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा एक अजीब जोड़ी है — सूर्य अधिकार और पहचान चाहता है, शनि कहता है "पहले मेहनत करो, फिर माँगो।" आपकी कुंडली में शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — यह "हर्ष विपरीत राजयोग" का हिस्सा है। **इसका फल यह है कि कठिनाइयाँ आएँगी, पर उन्हीं कठिनाइयों से आगे का रास्ता भी निकलेगा।** शत्रु-पक्ष, प्रतिस्पर्धी या कार्यस्थल के विवाद — इनमें अंततः आपका पलड़ा भारी रहेगा, पर बीच का वक्त धैर्य माँगेगा।

योगिनी दशा में भद्रिका (बुध) चल रही है और अंतर-योगिनी सिद्धा (शुक्र) मार्च 2026 से फ़रवरी 2027 तक है — बुद्धि, वाणी और लेन-देन में गति की बात है। पर विंशोत्तरी में शनि की कठोरता इस पर हावी है। संकेत **मिश्रित** हैं — बातचीत और योजना ठीक चलेगी, पर क्रियान्वयन धीमा रहेगा।

धन का प्रश्न — आमद और खर्च का असंतुलन

आपका द्वितीय भाव (धन) कन्या राशि में है, जिसके स्वामी बुध बारहवें भाव में हैं। बुध की अवस्था कुमार है — आधा फल। इसका सीधा अर्थ है कि **धन की आवक रुकेगी नहीं, पर उतनी नहीं होगी जितनी उम्मीद हो।** एकादश भाव (लाभ) में सूर्य-केतु की युति है और उसके स्वामी बुध बारहवें में — लाभ का मार्ग टेढ़ा है। गोचर में बुध इस समय कन्या में हैं (7 से 26 सितम्बर 2026), जो आपके द्वितीय भाव की राशि है — **सितम्बर के अंत तक कोई वित्तीय बात स्पष्ट हो सकती है।**

बारहवें भाव के शोधित बिंदु 5 हैं और वहाँ बुध व शुक्र दोनों हैं — व्यय का दबाव रहेगा। **इस वर्ष बड़े निवेश, नया कर्ज़ या साझेदारी में जोखिम से बचें** — विशेषकर जून से अक्टूबर 2026 के बीच जब गुरु बारहवें में हों।

फ़रवरी 2027 — अगला बड़ा मोड़

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी — और यह आपके लिए सचमुच राहत का समय होगा। बुध वाणी, व्यापार और बुद्धि के कारक हैं; और योगिनी में भद्रिका (बुध) पहले से चल रही है। दोनों दिशाएँ एक ओर आएँगी — यह मेल बताता है कि **फ़रवरी से दिसम्बर 2027 के बीच करियर में एक नई उड़ान संभव है।** तब आप लगभग 35 वर्ष के होंगे — यह वह उम्र है जब की गई मेहनत फल देना शुरू करती है।

मुख्य बातें

- **अक्टूबर 2026 तक** करियर में अपेक्षाकृत ठहराव रहेगा — गुरु का बारहवें में गोचर और शनि अंतर्दशा दोनों इसके कारण हैं; धैर्य ही सबसे बड़ा उपाय है।
- कार्यस्थल पर विवाद या प्रतिस्पर्धा हो तो घबराएँ नहीं — हर्ष विपरीत राजयोग कहता है कि **कठिनाई के बाद जीत आपकी होगी।**
- **सितम्बर 2026** में बुध का द्वितीय भाव में गोचर कोई वित्तीय स्पष्टता ला सकता है — उस समय के अवसर ध्यान से देखें।
- बड़े खर्च, नया कर्ज या साझेदारी — **जून से अक्टूबर 2026 के बीच टालें।**
- **फ़रवरी 2027 से** करियर और धन दोनों में एक नई गति आएगी — उसके लिए अभी से ज़मीन तैयार करते रहें।



परिवार, संबंध व दाम्पत्य — 2026

अ ध्या य 4

परिवार, संबंध व दाम्पत्य — 2026

वर्ष 2026 आपके पारिवारिक जीवन में एक गहरी परिपक्वता की माँग करता है। **यह वर्ष रिश्तों को तोड़ने का नहीं, उन्हें नई समझ के साथ गढ़ने का है** — और इसके लिए धैर्य सबसे बड़ा औज़ार होगा।

दाम्पत्य — परीक्षा की घड़ी, पर रास्ता भी है

सप्तम भाव (विवाह-साझेदारी) के स्वामी शनि अभी षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में बैठे हैं — और वर्तमान में सूर्य महादशा के साथ शनि की ही अंतर्दशा (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027) चल रही है। शनि सप्तमेश भी हैं और इस समय के अंतर्दशा-स्वामी भी — इसलिए दाम्पत्य का विषय इस पूरे वर्ष आपके जीवन के केंद्र में रहेगा।

शनि की प्रकृति विलंब, दायित्व और गंभीरता की है। **जीवनसाथी से या तो दूरी बढ़ती दिखेगी, या एक ऐसी गंभीर बातचीत होगी जो पहले टलती रही हो।** गोचर में शनि अभी अष्टम भाव (मीन, वक्री) में हैं — यह गूढ़ और संवेदनशील भाव है। अष्टम भाव से शनि की दृष्टि सप्तम भाव पर सीधे पड़ रही है — जिसका अर्थ है कि रिश्ते में कुछ अनकहा, कोई पुरानी गाँठ, ऊपर आ सकती है। इसे उलझन न मानें — यह सफ़ाई का मौसम है।

नवांश (D9) में गुरु कन्या लग्न में हैं और चंद्र मीन के सप्तम भाव में — यह संकेत देता है कि जीवनसाथी के साथ भावनात्मक गहराई की संभावना मौजूद है, पर उसे सतह पर लाने का प्रयास करना होगा।

फ़रवरी 2027 के बाद, जब बुध की अंतर्दशा आएगी, तब दाम्पत्य में बातचीत का स्वर हल्का होगा।

परिवार व घर — स्थिरता है, पर बोझ भी

चतुर्थ भाव (सुख, माता, घर) में जन्म-कुंडली का नीच चंद्र बैठा है — चतुर्थेश मंगल भाग्य-भाव (9) में स्वराशि मेष में हैं, जो एक राहत की बात है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव पर पड़ रही है — इससे घर-परिवार में कुछ तीखापन, जल्दबाजी या तनाव के क्षण आ सकते हैं, पर ढाँचा टिका रहेगा।

चतुर्थ भाव के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु 15 हैं — यह इस कुंडली में सबसे ऊँचा है। इसका सीधा अर्थ है कि **घर और माता का भाव इस कुंडली में बहुत मज़बूत है — यहाँ से आपको सहारा मिलता है, बिखराव नहीं।**

माता के साथ सम्बंध इस वर्ष भावनात्मक रूप से सघन रह सकते हैं। उनकी सेहत या मन का ध्यान रखना ज़रूरी होगा — विशेषकर अक्टूबर-नवंबर 2026 में जब गुरु कर्क से वृश्चिक की ओर बढ़ेंगे।

भाई-बहन व नज़दीकी रिश्ते — मिला-जुला समय

तृतीय भाव (भाई-बहन, साहस) के स्वामी शुक्र, द्वादश भाव में अस्त अवस्था में हैं — उनका बल क्षीण है। इससे भाई-बहन या करीबी मित्रों के साथ सम्पर्क में कमी, या किसी अपेक्षा का पूरा न होना संभव है। गोचर में शुक्र तृतीय भाव (तुला) में मार्गी हैं अभी — यह थोड़ी राहत देता है; **सितंबर-अक्टूबर 2026 तक इन रिश्तों में बातचीत और मेल-मिलाप का अच्छा समय है।** 3 अक्टूबर 2026 के बाद शुक्र वक्री होंगे — उसके बाद पुराने मनमुटाव फिर उठ सकते हैं, तब संयम रखें।

केतु की दृष्टि भी तृतीय भाव पर है — जो अचानक अलगाव या भावनात्मक शीतलता दे सकती है।

मुख्य बातें

- **दाम्पत्य इस वर्ष का सबसे संवेदनशील विषय है** — शनि अंतर्दशा और गोचर दोनों मिलकर सप्तम भाव पर दबाव डाल रहे हैं; धैर्य और खुली बातचीत ही रास्ता है।
- **घर व माता का भाव मज़बूत है** — चतुर्थ भाव के 15 शोधित बिंदु स्पष्ट संकेत देते हैं कि पारिवारिक नींव टिकी हुई है।
- **सितंबर-अक्टूबर 2026 तक भाई-बहन व मित्रों से सम्पर्क सुधरें** — उसके बाद शुक्र वक्री होंगे।
- **फ़रवरी 2027 से दाम्पत्य में बातचीत का माहौल हल्का होगा** — बुध अंतर्दशा संवाद को गति देगी।
- इस वर्ष घर में शांति बनाए रखने का सबसे बड़ा उपाय है — **जीवनसाथी को समय देना और बात सुनना, बिना तर्क किए।** शनि यही माँगते हैं।

सुखेशे सुखभावस्थे लग्नेशे तद्रतेऽपि वा ।

शुभदृष्टे च जातस्य पूर्णं गृहसुखं वदेत् ॥

चतुर्थेश चौथे भाव में हो, या लग्नेश चौथे में हो, और शुभ दृष्टि हो — तो पूरा गृह-सुख कहना चाहिए।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १५



स्वास्थ्य व मन — 2026

अ ध्या य 5

स्वास्थ्य व मन — 2026

वर्ष 2026 आपके लिए शरीर से अधिक **मन की परीक्षा** का वर्ष है। सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा यह माँग करती है कि आप भीतर से टिके रहें — थकान होगी, पर टूटना नहीं है।

मन की दशा — शनि व चंद्र का खींचतान

आपकी जन्म-कुंडली में चंद्र नीच अवस्था में चतुर्थ भाव में बैठे हैं — यह मन को स्वाभाविक रूप से संवेदनशील और कभी-कभी अस्थिर बनाता है। और इस वर्ष गोचर में शनि मीन राशि (भाव 8) में वक्री चल रहे हैं — जो अचानक दबाव, एकांत और भीतरी बेचैनी को बढ़ाते हैं। **भाव 8 अदृश्य बोझ का घर है** — वे चिंताएँ जो कहीं बोली नहीं जातीं, पर भीतर घुमड़ती रहती हैं।

साथ ही गोचर गुरु इस समय आपके बारहवें भाव (कर्क) में हैं — बारहवाँ भाव एकांत, व्यय और विश्राम का है। **गुरु यहाँ मन को भीतर की ओर मोड़ते हैं** — यह समय बाहरी उपलब्धियों का नहीं, भीतरी समझ बढ़ाने का है। जो इसे स्वीकार कर लें, उनके लिए यह एकांत उपचार बन जाता है; जो इससे लड़ें, उन्हें थकान और उदासी मिलती है।

शरीर — कहाँ सावधानी चाहिए

लग्नेश सूर्य ग्यारहवें भाव में हैं — बल भरपूर है, पर अवस्था मृत है, अर्थात् शरीर की प्रतिरोधक क्षमता अपनी पूरी छमता से काम नहीं कर रही। **थकान जल्दी आएगी, पर दिखेगी देर से** — यही इस वर्ष का सबसे बड़ा जाल है। आप काम करते रहेंगे, और शरीर चुपचाप

घिसता रहेगा।

गोचर में मंगल इस समय आपके ग्यारहवें भाव (मिथुन) से 18 सितम्बर 2026 तक चल रहे हैं — इस बीच ऊर्जा अधिक महसूस होगी, पर यह ऊर्जा जल्दबाजी और अतिश्रम में बह सकती है। मंगल के 18 सितम्बर को कर्क में जाने के बाद वे आपके बारहवें भाव में आ जाएंगे, जो **थकान, नींद की गड़बड़ी और गुप्त रोगों का संकेत** दे सकता है — यह समय आराम अनिवार्य है।

दृष्टि की बात करें तो शनि की दृष्टि जन्म-कुंडली में भाव 8 और भाव 12 पर पड़ रही है — दोनों शारीरिक क्षय और मानसिक थकान के संकेतक हैं। इस दृष्टि को हल्के में न लें।

केतु का प्रभाव — मन को दिशा चाहिए

गोचर में केतु आपके पहले भाव (सिंह) में हैं — **केतु लग्न में हो तो मन एक अजीब-सी बेचैनी में रहता है**, जैसे सब कुछ होते हुए भी कुछ खाली-खाली लगे। यह 5 दिसम्बर 2026 तक रहेगा। इस भावना को रोग मत मानिए — यह एक संकेत है कि मन को बाहरी चहल-पहल से नहीं, भीतरी शांति से भरना है।

मुख्य बातें

- **अक्टूबर 2026 के बाद विशेष सावधानी** — मंगल के बारहवें भाव में जाने और शुक्र के वक्री होने (3 अक्टूबर) के बाद नींद व तनाव पर ध्यान दें
- **रोज़ 20-25 मिनट शारीरिक श्रम** — मंगल को अनुशासित रखने का यही उपाय है; जिस दिन शरीर न थके, मन चिड़चिड़ाएगा
- **रात को सोने-जागने का समय पक्का रखें** — चंद्र नीच हैं, इसलिए नींद का अनुशासन मन का सबसे बड़ा उपाय है
- **दिसम्बर 2026 के बाद राहत** — शनि 11 दिसम्बर को मार्गी होंगे और केतु 5 दिसम्बर को सिंह से निकलेंगे; भीतरी बोझ कुछ हल्का पड़ेगा
- मन की कोई बात भीतर मत दबाइए — किसी विश्वसनीय से कहिए; यह कमज़ोरी नहीं, शनि की सबसे बुद्धिमान आज्ञा है



2026 के शुभ व सावधानी वाले महीने

अ ध्या य 6

2026 के शुभ व सावधानी वाले महीने

अभय शर्मा जी, वर्ष 2026 में हर महीना एक जैसा नहीं रहेगा — कुछ महीने आपके लिए आगे बढ़ने के द्वार खोलेंगे, कुछ में सँभलकर चलना होगा। सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा की पृष्ठभूमि में गुरु व शनि के गोचर इस वर्ष की असली कुंजी हैं, और इन्हीं से महीनों का रंग

तय होता है।

● शुभ महीने — आगे बढ़ने का समय

मई 2026 (गुरु अंतर्दशा का अंतिम चरण)

यह वर्ष का सबसे हल्का व अनुकूल दौर रहा। मई के पहले सप्ताह तक सूर्य महादशा में गुरु अंतर्दशा चल रही थी। गुरु आपकी कुंडली में लग्नेश हैं — सिंह लग्न में, युवा अवस्था में, भरपूर बल के साथ। इनकी अंतर्दशा का यह अंतिम सप्ताह निर्णय लेने, नई दिशा पकड़ने और पुराने प्रयासों का फल समेटने के लिए अनुकूल रहा। **जो काम फ़रवरी से मई के बीच शुरू हुए, उन्हें आगे संभालकर रखिए — उनकी जड़ें इस अनुकूल दशा में पड़ी हैं।**

अक्टूबर 2026 (गुरु का कर्क में अंतिम चरण — 31 अक्टूबर तक)

गुरु अभी कर्क राशि में हैं — यह गुरु की उच्च राशि है। आपकी चंद्र कुंडली से गुरु दसवें भाव में पड़ते हैं, जो कर्म व यश का भाव है। साथ ही जन्म-कुंडली के नवें भाव (भाग्य) पर गुरु की दृष्टि पड़ रही है। **अक्टूबर में गुरु के इस उच्च गोचर का अंतिम लाभ उठाएँ** — करियर में कोई बड़ा निर्णय, किसी बड़े व्यक्ति से मुलाकात, या किसी नई ज़िम्मेदारी को स्वीकारने के लिए यह महीना उपयुक्त है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु सिंह राशि में आ जाएँगे — वहाँ वे आपके लग्न में आएँगे, जो भी अनुकूल है, पर कर्क का उच्च बल चला जाएगा।

सितंबर 2026 का दूसरा पखवाड़ा

17 सितंबर के बाद सूर्य कन्या राशि में आते हैं और आपके दूसरे भाव (धन व वाणी) को सक्रिय करते हैं। बुध भी इस समय अपनी स्वराशि कन्या में मार्गी चल रहे हैं — धन-सम्बंधी बातचीत, दस्तावेज़, व्यापारिक समझौते इस दौरान सहजता से आगे बढ़ सकते हैं।

● सावधानी वाले महीने — धैर्य व विवेक की माँग

फ़रवरी 2026 — शनि अंतर्दशा का प्रवेश

फ़रवरी 2026 से सूर्य-शनि अंतर्दशा आरंभ होती है। आपकी कुंडली में शनि छठे भाव में स्वराशि में हैं — बल भरपूर है, पर वे छठे भाव के स्वामी भी हैं और सातवें भाव के भी। छठे भाव का स्वामी अपने ही भाव में बैठकर एक ओर हर्ष विपरीत राजयोग बनाता है, दूसरी ओर शनि की दृष्टि आठवें, बारहवें और तीसरे भाव पर पड़ती है। **यह दौर अचानक परिवर्तन, कार्यस्थल पर दबाव और अनावश्यक खर्च की सूचना है।** मन में बेचैनी रह सकती है, बड़े निर्णय जल्दबाज़ी में न लें।

जून-जुलाई 2026 — गुरु का कर्क में प्रवेश व योगिनी का दबाव

भद्रिका योगिनी में अंतर-योगिनी सिद्धा (शुक्र) 1 मार्च से फ़रवरी 2027 तक चल रही है। शुक्र आपकी कुंडली में अस्त और बारहवें भाव में हैं — इनका बल क्षीण है। **जून-जुलाई में व्यय पर नियंत्रण रखें, साझेदारी के मामलों में जल्दी मत करें।** इसी दौर में शनि मीन राशि में वक्री चल रहे हैं — यह आपके आठवें भाव में है, जो गुप्त बाधाओं व अप्रत्याशित घटनाओं का भाव है।

अक्टूबर के बाद — बुध व शुक्र का वक्री होना

3 अक्टूबर को शुक्र और 24 अक्टूबर को बुध वक्री होंगे। बुध आपके ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं और लाभ से सम्बंधित हैं। **इस अवधि में नई शुरुआत, नए अनुबंध या लाभ की उम्मीद में बड़े कदम उठाने से बचें।** पुराने विषयों पर पुनर्विचार करने का यह उचित समय है।

17 महीनेवार संक्षिप्त रूपरेखा

- **जनवरी-अप्रैल:** गुरु अंतर्दशा का शेष — योजनाएँ बनाएँ, पर फ़रवरी से शनि का आगमन याद रखें
- **मई:** वर्ष का सबसे संतुलित महीना — निर्णय लेने के लिए उचित
- **जून-अगस्त:** शनि का दबाव प्रबल — धैर्य रखें, विवाद से दूर रहें
- **सितंबर:** दूसरा पखवाड़ा अनुकूल — धन व वाणी सम्बंधी काम आगे बढ़ें
- **अक्टूबर:** गुरु का उच्च गोचर — माह के अंत तक बड़े अवसर का उपयोग करें
- **नवंबर-दिसंबर:** मिश्रित — शनि 11 दिसंबर को मार्गी होंगे, उसके बाद हल्कापन आएगा

मुख्य बातें

- **मई और अक्टूबर** — ये दो महीने वर्ष 2026 के सबसे अनुकूल हैं; बड़े निर्णय इन्हीं में लें
- **फ़रवरी से शुरू होती शनि अंतर्दशा** पूरे वर्ष की पृष्ठभूमि है — धैर्य और अनुशासन वर्ष का मूल मंत्र है
- **अक्टूबर के बाद बुध-शुक्र वक्री** — नए अनुबंध व लाभ-सम्बंधी कदम रोकें
- **11 दिसंबर 2026 को शनि मार्गी** होंगे — इसके बाद 2027 की तैयारी का समय शुरू होगा
- जो भी काम करें, उसे **अक्टूबर के अंत तक** पूरा करने का लक्ष्य रखें — गुरु का उच्च गोचर यही कह रहा है



2026 हेतु उपाय व मार्गदर्शन

अ ध्या य 7

2026 हेतु उपाय व मार्गदर्शन

वर्ष 2026 में आपकी कुंडली का सबसे बड़ा सूत्र यह है — **सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा का यह दौर कर्म, अनुशासन और भीतरी परिपक्वता माँगता है।** उपाय कोई जादुई फेरबदल नहीं करेंगे, बल्कि वे उस ऊर्जा के साथ चलना सिखाएँगे जो इस समय आपकी कुंडली में सक्रिय है।

सूर्य — आत्मबल का उपाय

सूर्य इस समय महादशा के स्वामी हैं, और आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं — लाभ व इच्छापूर्ति के भाव में। किंतु उनकी अवस्था मृत है,

जिससे उनका पूरा फल मिलने में बाधा है। वेशी योग भी इन्हीं से बन रहा है — इसलिए सूर्य को जगाना इस वर्ष सबसे ज़रूरी काम है।

- **सूर्योदय से पहले उठें** — यह एक नियम बना लीजिए। सुबह की धूप में पंद्रह मिनट खड़े रहें, रीढ़ सीधी रखें।
- कोई एक ज़िम्मेदारी उठाएँ जहाँ आप **आगे** खड़े हों — परिवार में, काम में या समाज में। सूर्य छिपने से नहीं, सामने आने से जागता है।
- ताँबे के बर्तन में रात को पानी रखें, सुबह पीएँ।

शनि — धैर्य और नियम का उपाय

आपकी कुंडली में शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — शत्रु-विजय व हर्ष विपरीत राजयोग का स्रोत। **शनि को भय नहीं, साथ चाहिए।** अंतर्दशा-स्वामी शनि इस वर्ष सबसे प्रभावशाली हैं।

- **समय की पाबंदी** — यह शनि का सबसे बड़ा उपाय है। जो काम आज का है, वह आज। शॉर्टकट का पूरी तरह त्याग।
- किसी मजदूर, वृद्ध या ज़रूरतमंद की **सचमुच** मदद करें — दिखावे के लिए नहीं।
- शनिवार को काले तिल या सरसों का तेल दान करें — कारण यह कि शनि छठे भाव के स्वामी भी हैं और अंतर्दशा-स्वामी भी; उनके प्रसन्न रहने से रोग, ऋण व शत्रु-बाधा कम होती है।
- **रोज़ एक छोटा काम बिना नागा करें** — चाहे पाँच मिनट का हो।

माणिक — रत्न की बात

आपका जीवन-रत्न **माणिक** (सूर्य) है, और इस समय सूर्य की ही महादशा चल रही है। अवस्था मृत होने से सूर्य का बल दबा हुआ है — माणिक उसी दबी हुई आवाज़ को ऊपर लाएगा। **कम से कम पाँच से सात रत्नी का माणिक, सोने में, रविवार को अनामिका में धारण करें।** यह आपके जीवन-रत्नों में पहले से है, इसलिए और भी निःसंदेह।

चाहें तो इसे हमारे अपने **koustubhgems.com** से ले सकते हैं — हर पत्थर प्रयोगशाला-प्रमाणित और सील-बंद पैकिंग में मिलता है।

मुख्य बातें

- **सूर्योदय पर उठना और धूप लेना** — सूर्य को जगाने का सबसे सरल उपाय।
- **समय की पाबंदी और बिना नागा एक दैनिक कर्म** — शनि को साधने की कुंजी।
- **ज़रूरतमंद की सेवा** — हर्ष विपरीत राजयोग का असली फल इसी से खुलता है।
- **माणिक धारण** — इस दशा में सबसे उपयुक्त रत्न, जीवन-रत्न भी यही है।
- उपाय बड़े नहीं, **नियमित** होने चाहिए — शनि-सूर्य दोनों निरंतरता से प्रसन्न होते हैं, एक बार की पूजा से नहीं।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ वार्षिक रिपोर्ट 2026 ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।